R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 26वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

मल्लिका डे 'विष्णु' विशेषांक

वर्ष 26 | अंक 18 | रविवार, इलाहाबाद, 27 सितम्बर 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार मल्लिका डे 'विष्णु'

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

संघर्षों का दौर पुराना लगता है ,
झील, पहाड़, झरना और नदियां खूब सरसाती हैं ।
आंगन सुंदर और सुखद ही भाता है ,
लिखने से लगता है पुराना नाता है । ।

तो बात हो रही है मेघालय की वादियों के शिलांग में रची बसी कवयित्री, लेखिका मल्लिका डे 'विष्णु' की। जीवन के तमाम उतार-चढ़ाव से गुजरती हुई कवयित्री मल्लिका डे 'विष्णु' आज लिखने-पढ़ने को अपनी सुखद अनुभूति समझती हैं। डॉक्टर अनीता पांडा से प्रेरित मल्लिका डे 'विष्णु' के लेखन में जो निखार आया है उसकी प्रेरणा स्रोत वही हैं। आनंद विभोर मन की गहराइयों से लेखन करने वाली कवयित्री, लेखिका मल्लिका डे 'विष्णु' का साहित्यिक सफर जारी है। कुछ बानगी देखिए -

पहले बानगी

आज फिर कारगिल की चोटियाँ मौन होकर भी
बहुत कुछ कह रही हैं...
देश का कोना-कोना दीप जलाकर
पुष्प अर्पित कर और आँखों में गर्व के आँसू भरकर
अपने अमर वीरों को नमन कर रहा है

दूसरी बानगी

प्यार से प्यार को जब देखा,
मुझे हर तरफ प्यार ही नज़र आया;
और नज़र का प्यार दिल में उतर आया।
दिल जब प्यार से भरा हो,
हर तरफ सब कुछ प्यार से भरे हुए लगे।

तीसरी बानगी

मैं भारत हूँ
कश्मीर की सुंदरता हूँ
कन्याकुमारी की भगवती अम्मान मंदिर हूं
अरुणाचल की उगती हुई सूरज हूं मैं
तो कच्छ शहर की रण उत्सव हूं

कवयित्री मल्लिका डे 'विष्णु' को इसी के चलते अगस्त माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिए ।

अंत में -

लिखते-लिखते बात बनेगी अपने आप,
जीवन बनता है इसी से सरताज।

-उमेश श्रीवास्तव

❖ जीवन संघर्ष

मेरा लेखकीय सफर और जीवन-संघर्ष

मेरा नाम मल्लिका देवी विष्णु है। लेखन के प्रति मेरा रुझान बचपन से ही रहा है। बचपन में मैं कभी-कभी लिखा करती थी, लेकिन लेखन को गंभीरता से अपनाने की शुरुआत वर्ष 2007-08 के आसपास हुई। उस समय डॉ. अनीता पंडा मैम ने मुझे लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके स्नेह और विश्वास ने मेरे भीतर छिपी लेखकीय प्रतिभा को पहचानने और उसे आगे बढ़ाने का साहस दिया। मैं उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ। डॉ. अनीता पंडा मुझे उस समय से जानती हैं, जब मैंने हिंदी विषय में एम.ए. किया था।

मेरे जीवन में वर्ष 2010 एक अत्यंत कठिन मोड़ लेकर आया। मेरे एकमात्र बड़े भाई का अचानक निधन हो गया। उस समय मेरे पिता का निधन वर्ष 2003 में ही हो चुका था। परिवार में मेरे भाई ही एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। संयोग से मुझे शिलांग के शिलांग जैलरोड बॉयज़ हायर सेकेंडरी स्कूल, जो एक डिफिसिट स्कूल है, में नौकरी मिली ही थी और मुझे पहला वेतन हाथ में मिले, उससे पहले ही मेरे भाई का निधन हो गया।

अचानक परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ मेरे कंधों पर आ गईं। एक ओर नौकरी की नई जिम्मेदारी थी, दूसरी ओर घर-परिवार की आर्थिक और सामाजिक जिम्मेदारियाँ। जीवन ने मुझे बहुत कम उम्र में ही परिस्थितियों से लड़ना और अपने पैरों पर खड़े रहना सिखा दिया। वर्ष 2016 में मेरा विवाह हुआ। लेकिन जीवन की चुनौतियाँ यहीं समाप्त नहीं हुईं। कोरोना काल के दौरान मेरे जेठ जी का निधन हो गया। इसके बाद मैंने अपनी सास को भी अपने साथ शिलॉन्ग ले आई, ताकि उनकी देखभाल कर सकूँ। आज मेरी माँ और मेरी सास–दोनों मेरे साथ रहती हैं और दोनों की जिम्मेदारी मेरे कंधों पर है। दोनों की आयु लगभग 81 वर्ष है। उनके प्रति मेरा दायित्व मेरे लिए केवल जिम्मेदारी नहीं, बल्कि मेरा कर्तव्य और मेरा प्रेम है।

इन सबके बीच मेरा अपना स्वास्थ्य भी कई बार मेरे लिए बड़ी चुनौती बनकर सामने आया। शारीरिक अस्वस्थता के कारण मुझे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। जनवरी 2026 में मेरे पैर की सर्जरी हुई। सर्जरी के बाद स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियों–टायफाइड और फैटी लिवर–के कारण मुझे लगातार एक के बाद एक स्वास्थ्य संकटों से गुजरना पड़ा। कई बार शरीर ने मेरा साथ नहीं दिया, लेकिन मन ने हार मानना स्वीकार नहीं किया।

इस सम्मान के लिए आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरे संघर्ष, मेरी संवेदनाओं और मेरे लेखन को पहचान देने के लिए मैं आप सभी के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता और आभार व्यक्त करती हूँ।

इन तमाम परिस्थितियों के बीच लेखन मेरे लिए केवल एक शौक नहीं, बल्कि आत्मिक शांति का माध्यम बन गया है। जब भी मुझे थोड़ा-सा समय मिलता है, मैं लिखती हूँ। शब्दों के माध्यम से मैं अपने मन की भावनाओं, पीड़ा, अनुभवों और समाज के प्रति अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त कर पाती हूँ। मेरे लिए लेखन वह स्थान है, जहाँ मैं स्वयं को सबसे अधिक सहज और शांत महसूस करती हूँ। इसलिए लेखन को मैं अपने जीवन के सबसे प्रिय कार्यों में से एक मानती हूँ।

जीवन ने मुझे अनेक बार परखा है, लेकिन हर कठिनाई ने मुझे और मजबूत बनाया है। पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, आर्थिक संघर्ष, अपनों को खोने का दर्द और स्वयं की शारीरिक कठिनाइयों के बावजूद मैंने अपने भीतर के लेखक को जीवित रखा। मेरे लिए लिखना केवल शब्दों को कागज पर उतारना नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों को अर्थ देना है।

सावित्री देवी सम्मान के लिए मेरा चयन किया जाना मेरे लिए अत्यंत भावुक और गौरवपूर्ण क्षण है। इस सम्मान के लिए आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरे संघर्ष, मेरी संवेदनाओं और मेरे लेखन को पहचान देने के लिए मैं आप सभी के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता और आभार व्यक्त करती हूँ।

यह सम्मान मेरे लिए केवल एक पुरस्कार नहीं, बल्कि मेरे अब तक के सफर, मेरे संघर्ष और मेरी लेखनी पर आपके विश्वास की स्वीकृति है। मैं आशा करती हूँ कि आगे भी अपनी लेखनी के माध्यम से समाज और मानव जीवन से जुड़े अनुभवों एवं संवेदनाओं को शब्द देती रहूँगी।

आप सभी का हृदय से धन्यवाद और सादर आभार

❖ कवितायें

मल्लिका डे 'विष्णु'
कवयित्री

कारगिलः एक वीर गाथा

आज फिर कारगिल की चोटियाँ मौन होकर भी
बहुत कुछ कह रही हैं...
देश का कोना-कोना दीप जलाकर
पुष्प अर्पित कर और आँखों में गर्व के आँसू भरकर
अपने अमर वीरों को नमन कर रहा है
यह केवल एक दिवस नहीं
बल्कि उन अनगिनत बलिदानों की स्मृति है
जिनके कारण हमारा तिरंगा
आज भी हिमालय की चोटियों
पर गर्व से लहरा रहा है
जब-जब कारगिल की गाथा सुनाई जाती है
तब-तब कैप्टन विक्रम बत्रा
की वह अमर हुंकार....'ये दिल माँगे मोर'
हर भारतीय के हृदय में साहस की लौ जला देती है
कैप्टन मनोज कुमार पांडेय का
अदम्य पराक्रम हमें सिखाता
कर्तव्य से बढ़कर कुछ भी नहीं....
ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव का अद्भुत साहस
राइफलमैन संजय कुमार की
वीरता आने वाली पीढ़ियों
के लिए प्रेरणा का शाश्वत दीपक है
लेफ्टिनेंट विजयंत थापर
कैप्टन अनुज नैय्यर
मेजर राजेश सिंह अधिकारी
कैप्टन सौरभ कालिया जैसे
असंख्य वीरों ने अपने प्राण
मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिए
सौरभ कालिया जिनका नाम
कारगिल युद्ध के वीरों में
अत्यंत सम्मान से लिया जाता रहेगा...
उन्हें युद्धबंदी बनाए गए
और बाद में वे वीरगति को प्राप्त हुई थी...

ताकि भारत का मस्तक कभी झुकने न पाए
उनकी शहादत केवल इतिहास
का एक अध्याय नहीं
बल्कि भारत की आत्मा में
अंकित एक अमिट संकल्प है
उनके रक्त की हर बूंद ने
हिमालय की बर्फ को भी
राष्ट्रप्रेम के रंग में रंग दिया
उनके परिवारों के त्याग
उनकी माताओं की ममता
उनके पिताओं के गर्व और उनकी संतानों के साहस
को भी आज पूरा राष्ट्र नमन करता है...

इस कारगिल दिवस पर केवल श्रद्धांजलि ही न दें
बल्कि यह संकल्प भी लें कि अपने कर्म
अपने चरित्र और अपने राष्ट्रप्रेम से भारत को और
अधिक गौरवशाली बनाएँगे
आइए उन अमर वीरों को स्मरण करते हुए अपने देश
को सजाने
संवारने और आगे बढ़ाने का हर संभव प्रयास करें
यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी...

मेरी बात

कौन अपना कौन पराया,
बेगाना है, हर कई यहां
लोग कहते अपनों का
बाजार गरम है,
पर यहां तो सब अकेले खड़े हैं।
रिश्ते बनाने की कोशिश में
जिम्मेदारियों के बोझ तले
दब कर सब रह गए हैं त
रिश्ते यहां खरीदा बेचा
जा सकता है,
लाख सही कर लो,
पर एक गलती पर
लाखों बातें आपको
सुनाई जाती है त
अपनों के वेश में,
यहाँ बेगानों के भीड़ जमा हैं त
वहाँ कौन अपना,
ओर कौन पराया।
बदली हुई इस दुनिया में,
आपको भी बदलना क्या जरूरी है?
खामोशी को जहाँ सब कुछ की
जवाब समझी जाती थी।,
वही आजकल बड़बोलेपन का
जमाना खूब गरम है।
जहाँ लोगों के दिलों में
घर हुआ करते थे ,
अब सब के दिल विरान हैं।
स्वार्थ के होड़ में,
सब प्रतियोगिताओं में व्यस्त हैं,
और यहाँ रिश्तों के बाजार में
रिश्ते खरीदे बेचे जा रहे है।
मुस्कराहट के पीछे ,
गम छिपाए रखना यो ही जरूरी है।
किसे कहे की बात
यहाँ तो सारे बेगाने हैं।

अब समय है आन्दोलन का

क्या केवल अँग्रेजी ही हमे
शिक्षित करती है ?
हिंदी पढ़ने वाले क्या सब
देहाती होते हैं ?
हिन्दी है मान, हिन्दी है शान
बहुत बोल चुके हैं हम,
यह सब बोलने वाले भी
अंग्रेजी सीखने के होड़ में शामिल हैं।
कहते हैं कुछ लोग अँग्रेजी जरूरी है,
क्योंकि वह विश्व भर में संचार का माध्यम है
हम अँग्रेजी भाषा सीखने के खिलाफ़ नहीं
पर स्वाधीन भारत में,
हमे भी स्वाधीन भाषा की ज़रूरत है ध
और उस गुलामी की मानसिकता से
निकलना हैं,
जहां अंग्रेजी को ज्ञान का वाहक माना जाता हैं।
अब हमे हिन्दी को राजभाषा से
राष्ट्रभाषा की ओर ले जाना है।
माँग चुके है बहुत बार ,
अब आंदोलन का समय है।
हिन्दी के देश में हिन्दी दिवस क्यों?
हर दिन जहां हिन्दी है,
वहां हर दिन हिन्दी दिवस होगी।
अब समय है बदलाव का,
समय है आंदोलन का ,
सही तरीके से स्वाभिमानी बनने का ।
राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र कैसा?
हमे समझने होगे हर विकास शील
देश के पास अपनी भाषा मौजूद है ध
और अपनी भाषा की साथ ही
हर राष्ट्र आगे बढ़ सकती हैं,
और विकास की ओर जा सकती हैं।
हज़ार साल पुरानी भाषा हिन्दी ही हमारी
हज़ारों साल पुरानी गौरव शाली
संस्कृति को वहन कर सकती हैं।
हिन्दी को हिन्दी की सही जगह देकर ही
हिन्दुस्तान सही मायने में गढ़कर दिखाना है ध

आज़ादी!

सन उन्नीस सौ सैंतालीस
छोटी बच्ची उमा
दौड़ती हुई आती,
और माँ से बोलती,
सुना है माँ सब कहते
आजादी मिली है-
तिरंगा लालकिले में फहराएगी। अब देश अपनी मर्जी से चलेगा!
किसी के जुल्म देश और न सहेगा!
माँ, यह आजादी क्या होती है?
माँ कहती, पता नहीं बेटा
पूछो अपने पापा से।
छोटी उमा आशान्वित नज़र से पापा की ओर देखती,
तो पापा कहते, आजादी
यानी अपनी मर्जी चलाना।
बेटी कहती, किस पर?
पापा कुछ जवाब नहीं दे पाते
या कुछ दिया भी होगा
जो छोटी सी बच्ची को समझ न आया हो।
माँ मन में मुस्कुराए और कहें,
आजादी! मिलेगी क्या सच में?

आज इक्कीसवीं सदी
घर-घर एक ही प्रश्न है,
सोचे, आजादी मिलेगी?
कुसंस्कारों से, कुरीतियों से?
कु नजरों से? कु बंधनों से?
गुलामों की गुलामी से?
छोटी उमा आज भी पूछे,
आजादी क्या है, माँ?
माँ सोचे, शायद सरकारों की आजादी ही आजादी कहल
ाए!
और उमा लहराते हुए तिरंगे देख,
माँ से पूछे, क्या यही आजादी है, माँ?
माँ आज भी निरुत्तर, आज भी निश्चुप।

प्यार का नजरिया

आए हम प्यार के नजरिए को बदलते हैं।
जहाँ तक नज़र जाए, वहाँ तक
प्यार करते हैं।
आओ प्यार की परिभाषा बदलकर दुनिया को गले ल
गाते हैं।
अपनों को गले लगाना तो आसान है,
गैरों को गले लगाकर प्यार के
दायरे को बढ़ाते हैं।
जहाँ न कोई जाति-धर्म हो,
न कोई ज़मीन में लकीर हो,
आओ हम सब मिलकर प्यार
के नजरिए को बदलते हैं।

प्यार को अपनी आँखों में इतने भरें,
कि नफरत का
एक बूंद भी न बचे कहीं पर।
आओ हम सब मिलकर प्यार की परिभाषा बदलें।
दुनिया में सभी को प्यार से जीना सिखाएँ।
आओ सब मिलकर ऐसा दुनिया का निर्माण करें।
जहाँ बलात्कारी न हो,
लालच न हो,
भ्रूण हत्यारे न हो,
जहाँ वृद्धाश्रम न हो,
माँ-बाप अपने बच्चों पर बोझ न हो।
जहाँ मनुष्यों के साथ-साथ
पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों के लिए
पर्याप्त जगह हो।
आओ हम सब मिलकर प्यार के नजरिए को बदलें।
जहाँ चारों ओर, बिना कोई
अपेक्षा का प्यार ही प्यार हो।

प्यार

प्यार से प्यार को जब देखा,
मुझे हर तरफ प्यार ही नज़र आया;
और नज़र का प्यार दिल में उतर आया।
दिल जब प्यार से भरा हो,
हर तरफ सब कुछ प्यार से भरे हुए लगे।
पता नहीं शिकायतों का पिटारा कहां गुम हुआ,
सभी के प्यार भरे दिल साफ नज़र आने लगे।
रिश्तों में प्यार का भरमार लगा,
मन खुशी से झूमने लगा,
कहीं कुछ कमी दिखाई नहीं दी,
हर्षित पुलकित मन मचलने लगा,
प्यार में भक्ति की भावना आने लगी;
और मन भक्तिमय होने लगा।
जिसे ढूंढ रही थी वर्षों से
वह तो एकदम सामने दिखने लगा।
प्यार ही भक्ति, प्यार ही शक्ति
मुझे समझ में आने लगी,
जिस मुस्कान के लिए तरसती रहती,
अब वह मुस्कान होठों से दूर नहीं जाती।
आंखों में चमक, शरीर में स्फूर्ति
हरदम मैं महसूस करने लगी।
प्यार से मैं प्यार का मोल लगाने लगी,
प्यार से मैं प्यार को मापने लगी,
चारों तरफ प्यार ही प्यार देखने लगी।
जिंदगी के मझधार में भी किनारा दिखने लगा।

छाया से बाते

उस दिन मैं सूरज के नीचे खड़ी होकर,
सूरज को देखने की कोशिश कर रही थी।
अकेलेपन की वोध से भुगत रही थी।
उस वोध से मन कुछ चंचल हो रहा था।
मैं यहां-वहां देखते हुए शायद किसी को ढूंढ रही थी।
अचानक देखा, मेरे पाँव के साथ पाँव मिलाकर,
जो देखने पर मेरे ही जैसे कोई खड़ी होकर,
मेरी तरफ देख रही है और मीठी-मीठी हंस रही है।
मैंने पूछा, 'ए कौन है रे तू?'
वह कहती, 'क्या रे, अकेलेपन से भुगत रही हो?'
मैंने बिना कुछ बोले उसकी ओर देख रही थी।
उसने कहा, 'मैं जो तेरी छाया हूं रे, हूं तेरे साथ।
तू अकेली नहीं है।
तुम बिन जो मेरी कोई अस्तित्व ही नहीं है रे।
तेरे साथ ही मेरे जन्म और तेरे साथ ही मेरी मृत्यु।
मुझे जो तेरे साथ ही आमृत्यु रहना ही पड़ेगा।'
मैंने कहा, 'बाः, सोचकर ही अच्छा लग रहा है।
मेरे लिए भी कोई जिंदा है। लेकिन तू सच में मेरे साथ रहेगी न, मेरे सुख-दुख में?'
उसने कुछ नहीं कहा।
शायद कहा भी होगा, जो मुझे समझ नहीं आया।
फिर एक दिन अमावस की रात बैठी हूं,
अपने ही मन से अनर्गल बातें कर रही थी,
मेरे चिरसाथी छाया के साथ। लेकिन अचानक ख्याल आया,
छाया क्यों बात नहीं कर रही है?
मैं भय और डर से आतंकित होकर बोलने लगी,
'छाया, छाया, कहा है तू?'
बहुत ढूंढने पर जब वह नहीं मिली,
तब बस मैं अपने डर को भगा कर,
मन ही मन मुस्कुराई।
उस दिन मैं सूरज के नीचे खड़ी होकर,
सूरज को देखने की कोशिश कर रही थी।
अकेलेपन की वोध से भुगत रही थी।
उस वोध से मन कुछ चंचल हो रहा था।
मैं यहां-वहां देखते हुए शायद किसी को ढूंढ रही थी।
अचानक देखा, मेरे पाँव के साथ पाँव मिलाकर,
जो देखने पर मेरे ही जैसे कोई खड़ी होकर,
मेरी तरफ देख रही है और मीठी-मीठी हंस रही है।
मैंने पूछा, 'ए कौन है रे तू?'
वह कहती, 'क्या रे, अकेलेपन से भुगत रही हो?'
मैंने बिना कुछ बोले उसकी ओर देख रही थी।
उसने कहा, 'मैं जो तेरी छाया हूं रे, हूं तेरे साथ।
तू अकेली नहीं है।
तुम बिन जो मेरी कोई अस्तित्व ही नहीं है रे।
तेरे साथ ही मेरे जन्म और तेरे साथ ही मेरी मृत्यु।
मुझे जो तेरे साथ ही आमृत्यु रहना ही पड़ेगा।'
मैंने कहा, 'बाः, सोचकर ही अच्छा लग रहा है।
मेरे लिए भी कोई जिंदा है। लेकिन तू सच में मेरे साथ रहेगी न, मेरे सुख-दुख में?'
उसने कुछ नहीं कहा।
शायद कहा भी होगा, जो मुझे समझ नहीं आया।
फिर एक दिन अमावस की रात बैठी हूं,
अपने ही मन से अनर्गल बातें कर रही थी,
मेरे चिरसाथी छाया के साथ। लेकिन अचानक ख्याल आया,
छाया क्यों बात नहीं कर रही है?
मैं भय और डर से आतंकित होकर बोलने लगी,
'छाया, छाया, कहा है तू?'
बहुत ढूंढने पर जब वह नहीं मिली,
तब बस मैं अपने डर को भगा कर,
मन ही मन मुस्कुराई।

अहंकारी रास्ते

रास्ते करना है मुझे तुझसे कुछ बातें,
पर तुम तो इठलाते हुए लोगों को
भटकाने में गर्व से मदमस्त होकर
हर तरफ फैलकर और भी फैलती जा रही हो।
उस दिन मैंने कुछ बच्चे
तुम्हारे एक गली में
बैठकर नशा करते हुए देखा।
मैंने सोचा कुछ कहूं,
पर तेरे मुस्कराते हुए चेहरे
को देख घृणा और दुख से
मुँह फेरकर मैं भी मौन रह गई।

❖ कवितायें

मल्लिका डे 'विष्णु'

कवयित्री

तुझे अहंकार किस बात का है,
क्योंकि तू है जरिया मंजिल तक पहुँचाने का।
गर्मी में लोग जब तरसते हैं
थोड़ी सी हवा के लिए,
क्या तू दे पाती है वह?
ठंड में तड़प-तड़प कर न जाने
कितने अपने जान गंवा बैठते हैं।
तुझे किस बात पर है अहंकार
कि तुझे फैलाने के लिए
पहाड़-पर्वत काटा जा रहा है?
प्रकृति को नष्ट-भ्रष्ट किया जा रहा है।
तुझमें ही होती हैं सभी बुराइयों
का लेन-देन।
फिर किस बात का है तुझे अहंकार?
तुझे लगता है कि तेरी अंत नहीं है,
तेरा भी अंत है सागर महासागर में।

मैं भारत हूँ

मैं भारत हूँ
कश्मीर की सुंदरता हूँ
कन्याकुमारी की भगवती अम्मान मंदिर हूं
अरुणाचल की उगती हुई सूरज हूं मैं
तो कच्छ शहर की रण उत्सव हूं
मैं भारत हूं
संसार का पथप्रदर्शक हूँ

मैं राजस्थान की धूल हूँ
तो चेरापूंजी की बारिश हूँ
मैं रामायण का राम हूँ
तो महाभारत का कृष्णा हूँ
मैं भारत हूँ
शांति का दूत हूँ
मैं संसार का प्रथम लिखा हुआ ग्रंथ वेद हूँ
तो मैं तथाकथित देवों की भाषा संस्कृत हूँ
मैं महावीर, गौतम बुद्ध, गुरु नानक हूँ
मैं चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य अशोक हूँ
मैं महाराणा प्रताप शिवाजी रानी लक्ष्मीबाई हूँ
मैं भगत सिंह राजगुरु सुखदेव हूँ
मैं सुभाष हूँ
तो मैं आज़ाद हिन्द फौज हूँ

मैं भारत हूँ
कोई आंख दिखाए तो
उसकी आंख नोचने की क्षमता रखती हूँ
मैंने बहुत अत्याचार देखा हैं
मैंने बहुत आक्रमणकारियों को देखा हैं
तो उन सबको पीठ दिखाकर भागते हुए भी देखा हैं
मैं भारत हूँ
पता नहीं कितनी पुरानी हूँ
मुझे मिटाने वाले खुद मीट गए
मेरी मृत्यु नहीं हैं
मैंने बहुतों वीर सैनिकों को जन्मा हैं
जिनके वीरता के सामने सब को
मुहँ की खाना पड़ता है
मैं भारत हूँ
दुनिया को दोस्ती का पाठ पढ़ाता हूँ

देखे सपने

अम्मा कहे, बनना डाक्टर
पापा की इच्छा, बनूँ मैं इंजीनियर
सपनों की पोटली बाँधे आँखों में
जाती हूँ मैं विद्यालय
वहां टीचर की बातों से
रहती हूँ मैं फुल कन्फ्यूज़
सपनों की दुनिया में ले जाए सब
पर करना पड़ेगा मेहनत मुझ अकेले को!
कैसी ये अन्याय! सहना है मुझको,
मेरा तो है सपना, फूल बनकर
बागों में खिलती रहूं
तितली-भौरों को पास बुलाकर
उनसे मैं खूब खेलूँ
मेरा सपना है, मैं पंछी बनकर
आसमान में उड़ती बनूँ
मेरा सपना है, मैं एरोप्लेन बनकर
ऊँची-ऊँची बिल्डिंग के ऊपर से उड़ जाऊँ
मेरा सपना है, मैं घोड़ा बनकर
टगबग टगबग करके चलूँ
मेरा मन चाहे, हाथी बनकर
मदमस्त बनकर रहूँ
सपना तो मेरा वह भी है
रंग-बिरंगे तितली बनकर
फूल-फूल, डाली-डाली उड़ती चलूँ मैं
मेरा सपना है, सबको अपना मानकर घुल-मिल जाऊँ
बड़ों की बड़ी-बड़ी बातें मैं न समझूँ
पर मेरी छोटी बुद्धि मेहनत करना न चाहे
मेहनत के बोझ तले दबकर रहना न चाहे
पर बिना मेहनत के कुछ भी नहीं होती,
मन मेरा ये भी समझे

कविता

कविता कवियों का शान
कविता दर्शन शास्त्र
कविता साहित्य शास्त्र
कविता समाज शास्त्र
कविता रसायन शास्त्र
कविता भौतिक शास्त्र
कविता जीवन शास्त्र
कविता भविष्य को देखती
अतीत से शिक्षा लेती
इतिहास के पन्नों को
समय समय पर पलटकर देखती
हमे दुनिया की सच्चाई से अवगत कराती
कविता समाज को अपना प्रतिबिंब दिखती
प्रकृति को सजाती संवारती है कविता
भू-मंडल की गूढ़ बात को बतियाती कविता
बाल मन का बचपना है कविता
मन की सुंदरता को दिखाती कविता
हंसती खिलखिलाती हुई चेहरा है कविता
प्रेमियों की धड़कन है कविता
माँ की ममता और पिता का प्यार है कविता
मकान को घर बनाती और उसमें किलकारी सुनाती है कविता
आसमान में छायी बादल
बरसात में झरझर झरने की आवाज
और नदी की धारा है कविता
स्वत स्फूर्त भावना
विरहिणी की इन्तेज़ार
बरसती आंखों की आँसू हैं कविता

दो एम्बुलेंसों की बीच बातचीत

डङ'दोस्त, तू दुखी क्यों है?
हमें तो हमेशा खुश रहना चाहिए।
हम रोगियों को बचाने का ज़रिया जो हैं।
अच्छा दोस्त, तू बता–आज तक हमने
कितने अनगिनत लोगों की जान बचाई है।
मुझे तो कभी-कभी अपने पर गर्व होता है।
अगर हम न होते, तो उन बीमार रोगियों का क्या होता?
कभी-कभी मैं बहुत थक जाता हूँ,
फिर भी कोशिशें पूरी करता हूँ।
गुस्सा भी बहुत आता है,
पर अगले ही पल सोचता हूँ
कि हमारा काम ही यही है–
निस्वार्थ भावना से दूसरों की सेवा करना
और रोगियों को समय पर
इलाज के लिए अस्पताल पहुँचाना।
दोस्त, तू कुछ बता–
तू इतना चुप क्यों है?'

दूसरा कहता है–
'रोगियों को अस्पताल पहुँचाना
काम तो हमारा है,
पर कभी-कभी कुछ ऐसे नज़ारे देखने मिल जाते हैं
कि मन दुख से भर जाता है।
कहो तो तुम–एक बात बताओ,
क्या हम हमेशा रोगियों को
समय पर अस्पताल पहुँचा पाते हैं?
हज़ारों कोशिशों के बाद भी
कुछ रोगी न लौट आने वाली दुनिया में चले जाते हैं।
मेरे साथ तो यह कई बार हुआ है।
कभी रास्ते में ट्रैफ़िक के कारण,
कभी रास्ते पर निकले जुलूस के कारण,
तो कभी राजनेताओं के आने-जाने के कारण।
अरे, कुछ दिन पहले की ही बात ले लो–
एक बूढ़े व्यक्ति को दिल की बीमारी थी।
जुलूस के कारण रास्ता बंद था,
उसे समय पर अस्पताल नहीं पहुँचा पाए,
बेचारे ने मेरे अंदर ही अंतिम सांस छोड़ दी।
और आज की बात तो मत पूछो–
एक छोटी बच्ची, जो अस्थमा की रोगी थी,
ट्रैफ़िक के कारण समय पर अस्पताल न पहुँच पाने से
दम तोड़ गई।
उसकी माँ का हाहाकार,
पिता का दर्द–मुझसे
भुलाए नहीं भूल रहा है।'

पहला कहता है–
'आँसू मत बहा भाई,
मन तो हमारा भी उदास होता है।
ऐसे नज़ारे मैंने भी बहुत बार देखे हैं।
पर कुछ बातें ऐसी भी हैं
जब हमने बहुतों को मुस्कराहट दी है।
उसी पल को सोचकर–
आओ, साथ में हम भी मुस्करा लेते हैं।'डङ

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धमतरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैंगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622

❖ जीवन परिचय

मल्लिका डे 'बिष्णु'

मल्लिका डे 'बिष्णु'

पति का नामः सुजय बिष्णु
जन्मस्थानः शिलांग, मेघालय
डाक व्यवहार का पूर्ण पताः C/O. Shillong Jail Road Boys' HS School, Jail Road, Shillong, Meghalaya, Pin - 793001
मोबाइलः 87947 347 03
शिक्षाः स्नातोकोत्तर एम. ए. (हिंदी), बी. एड.
शैक्षिक अनुभवः
- वर्तमानशिलोंगकेशिलोंग जेल रोड उच्च माध्यमिक बॉयज विद्यालय' में 2010 से सहायक हिंदी के अध्यापक के पद पर कार्यरत त
- 2005से2010तकहिल व्यू सेकेंडरी ए.आर.सी.' हिंदी के सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत थी त
- 2001 से 2003 तक शिल्लोंग आर्मी स्कूल में हिंदी के सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत थी त

प्रकाशनः
- भारत कथा माला के अंतर्गत '21 श्रेष्ठ बालमन की कहानियाँ' मेघालय में प्रकाशित कहानी 'छुटकी नाव' (2023)
- पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्याल य शिलांग के अंतर्गत 'नेहू ज्योति' में प्रकाशित कविता (2022)
- 'संवाद करते मेघ' पुस्तक में प्रकाशित कविताएं (2024)
- विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताएँ
- आकाशवाणी पूर्वोत्तर, शिलोंग में 2006 से 2011 तक उदघोषिका पद पर कार्यरत थी तथा समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों की प्रस्तुति
- शिलांग से प्रकाशित त्रैमासिक ई पत्रिका मेघदल साहित्यिक में संयोजक

सम्मान--
-स्व महेन्द्र कुमार तिवारी फाउंडेशन, झाँसी द्वारा आयोजित बेस्ट टीचर अवार्ड 2024 से सम्मानित।
'शहर समता समाचार पत्र प्रयागराज' से काव्य रचना के प्रस्तुति हेतु सम्मानित
अन्य - आदिवासी समुदाय के बच्चे , मूल तः खासी और गारो बच्चों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा हिन्दी सिखाना आदि।
साहित्यिक मंच से संबंधितः
सदस्य अंतर्राष्ट्रीय महिला काव्य मंच शिलांग।
शहर समता विचार मंच शिलांग की उपाध्यक्ष।
वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच मेघालय इकाई की सदस्या

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996
Mo. 9005239332

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
संजय सक्सेना
रचना सक्सेना
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

❖ लघुकथायें

मल्लिका डे 'विष्णु'
कवयित्री

कौन दोषीष्ठ? (लघुकथा)

सुमन को परीक्षा देने जाना था। कल वह बहुत जल्दी पहुँच गई थी, इसलिए बेचारी को परीक्षा हॉल के बाहर बहुत देर तक इंतज़ार करना पड़ा था। वैसे भी परीक्षा हॉल दूर होने के कारण एडमिट कार्ड मिलने के बाद से ही लड़की बहुत टेंशन में थी कि वह परीक्षा हॉल तक कैसे जाएगी। इसी चिंता में, पहले दिन परीक्षा 2:30 बजे होने के बावजूद वह 12:30 बजे ही घर से निकल गई थी और लगभग डेढ़ घंटे पहले परीक्षा हॉल पहुँच गई थी।

दूसरे दिन उसने जमकर अपने पेपर की तैयारी की और परीक्षा हॉल के लिए 12:35 बजे निकल गई। लेकिन उस दिन रास्ते में कुछ ज़्यादा ही ट्रैफिक जाम था। सुमन ने सोचा कि अच्छा ही किया जो वह जल्दी निकल गई, और जीजा जी ने जल्दी से टैक्सी भी बुक कर दी। उसने अपने आप से कहा–चलो, समय से पहुँच जाऊँगी।

पर उसे तब चिंता होने लगी जब 1:30 बजे तक उसकी गाड़ी ट्रैफिक के कारण बिल्कुल रुकी हुई थी। थोड़ी सी आगे बढ़ती, फिर रुक जाती। ऐसे में जब वह परीक्षा हॉल पहुँची, तब लगभग 3:30 बज चुके थे। बहुत मिन्नतें करने के बाद भी किसी ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया और उसे परीक्षा देने नहीं दी गई। बहुत रोने के बाद भी किसी को उसकी इस बात पर यक़ीन नहीं हुआ कि समय से पहले निकलने के बावजूद वह समय पर नहीं पहुँच पाई थी। किसे वह समझाती कि आधे घंटे की दूरी तय करने के लिए वह लगभग दो घंटे पहले घर से निकल गई थी।

सुमन अपनी दीदी को फोन करके रोने लगी। अब उसके पास रोने के अलावा कोई और चारा नहीं था। वह रोते-रोते निकल आई, पर उसके आँसुओं पर किसी को दया नहीं आई। सब वहाँ नियमों के बंधन में बँधे हुए थे।

अब सुमन दोष किसे दे–अपनी किस्मत को या सिस्टम को?

जवाबदेही

चुनाव का मौसम था। छोटे से कस्बे में हर दीवार पर पोस्टर, हर गली में नारे और हर चौपाल पर वादों की बारिश हो रही थी।

राघव, जो एक साधारण शिक्षक था, रोज़ यह सब देखता और सोचता–'क्या सच में बदलाव आएगा?'

एक दिन कस्बे में बड़े नेता विक्रम सिंह आए। उन्होंने मंच से ऊँची-ऊँची बातें कीं–रोज़गार, विकास, शिक्षा, सब कुछ बदल देने के वादे। भीड़ तालियाँ बजा रही थी। राघव भी वहाँ खड़ा था, पर उसके मन में सवाल थे।

सभा खत्म होने के बाद राघव ने साहस जुटाकर नेता से पूछा, 'साहब, पिछले चुनाव में भी आपने यही वादे किए थे, फिर कुछ बदला क्यों नहीं?'

नेता मुस्कुराए और बोले, 'इस बार मौका दीजिए, सब ठीक हो जाएगा।'

राघव ने शांत स्वर में कहा, 'मौका तो हमने दिया था, लेकिन जवाबदेही नहीं माँगी।

बिना नौकरी का बेटा

घर में आज बड़ी खुशी थी। छोटे बेटे रोहन की पहल ी तनख्वा आई थी। मिठाइयाँ बाँटी जा रही थीं। पिता जी गर्व से आने-जाने वाले को बता रहे थे–

'मेरा बेटा अब इंजीनियर बन गया हैष्ठ पचास हजार महीना कमाता है!'

उसी कमरे के कोने में बड़ा बेटा अमित भी बैठा था। वह पिछले तीन साल से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था।

सुबह चार बजे उठकर पढ़ना, लाइब्रेरी में घंटों बैठना, फॉर्म भरना, परीक्षा देना, रिजल्ट का इंतज़ार करना – यही उसकी दिनचर्या थी। लेकिन घरवालों की नज़र में वह बस एक ही वाक्य था–'अभी तक कुछ करता नहीं है।'

शाम को रिश्तेदार आए। चाय के साथ बातचीत शुरू हुई। एक चाचा ने हँसते हुए पूछा,'और अमित बेटा, तुम क्या करते हो आजकल?'

अमित कुछ बोल पाता, उससे पहले पिता जी मुस्कुरा दिए–

'अरे, बस तैयारी ही कर रहा हैष्ठ बाकी तो घर पर ही रहता है।'

कमरे में हल्की हँसी गूँज गई।

अमित भी मुस्कुरा दिया। वह जानता था – बेरोज़गार बेटे को दुखी होने का भी अधिकार नहीं होता।

रात को बिजली चली गई।

माँ रसोई से बोलीं–'अमित, ज़रा छत से कपड़े उतार ला।'

'अमित, दरवाज़ा बंद कर दे।'

'अमित, सिलेंडर भी चेक कर लेना।' घर में हर छोटे काम के लिए अमित सबसे ज़रूरी था।

बस सम्मान के समय वह ग़ायब कर दिया जाता था।

अगले दिन पिता जी ने पड़ोसी से परिचय कराया–

'ये मेरा छोटा बेटा रोहन इंजीनियर है।

फिर अमित की तरफ़ देखकर बोले–'और ये बड़ा हैष्ठ'

कुछ पल रुके,

जैसे उसके लिए कोई पहचान ढूँढ रहे हों।फिर बात बदल दी।

उस रात अमित देर तक छत पर बैठा रहा।उसे पहल ी बार समझ आया–घर में बेरोज़गार बेटे की जगह ठीक वैसी ही होती है जैसे पुराने कैलेंडर की दीवार पर।

ज़रूरत पड़ने तक टंगा रहता है,

फिर नया साल आते ही उतार दिया जाता है।

और सवाल यह नहीं था कि अमित निकम्मा था या नहींष्ठ

सवाल यह था कि

क्या इस समाज में इंसान की पहचान सिर्फ उसकी नौकरी से तय होती है?

अधिकार

सुबह पाँच बजे से रात ग्यारह बजे तक...

रसोई, दफ़्तर, बच्चे, मेहमान, फिर रसोई।

सब कहते–'बहू है, घर भी तो संभालना ही होगा।'

महीने की पहली तारीख आई। वेतन खाते में आया।

सास ने मुस्कुराकर कहा, 'चलो, इस बार अपनी माँ के लिए एक अच्छी-सी शॉल भेज देते हैं... कह देना, मैंने भेजी है।'

बहू ने बिना कुछ कहे पैसे दे दिए।

शॉल उसकी कमाई से खरीदी गई, लेकिन श्रेय किसी और के नाम चला गया।

रात को उसने अपनी पुरानी चप्पल देखी, जो कई जगह से घिस चुकी थी। उसे बदलने का मन हुआ, फिर चुपचाप वापस रख दी।

उसके मन में बस एक ही सवाल गूँजता रहा–

क्या बहू की कमाई केवल खर्च करने के लिए होती है, या उस कमाई पर उसका अपना भी कोई अधिकार होता है?

और यदि त्याग भी उसी का हो, कमाई भी उसी की हो, तो सम्मान किसी और के हिस्से में क्यों चला जाता है?

पिता

राहुल शहर में अच्छी नौकरी करने लगा था। अब उसे लगता था कि उसके बूढ़े पिता पुरानी सोच के हैं। वह उनकी बातों को अक्सर अनसुना कर देता था।

एक दिन दफ़्तर से लौटते समय उसने देखा कि सड़क किनारे एक वृद्ध व्यक्ति भारी बोझ उठाने की कोशिश कर रहा है। राहुल तुरंत दौड़कर गया, उनका सामान उठाया और उन्हें सुरक्षित उनके घर तक पहुँचा दिया।

घर लौटते ही पिता मुस्कुराए और बोले, 'आज किसी की मदद करके आए हो?'

राहुल चौंक गया, 'आपको कैसे पता?'

पिता ने शांत स्वर में कहा, 'जिस बेटे को मैंने बड़ा किया है, उसके चेहरे की चमक ही मुझे सब कुछ बयाँ कर देती है।'

विश्वास

यूनिवर्सिटी में समाजिक विज्ञान की छात्रा थी रमा। इन्टरनेल टेस्ट में उसके कम नंबरों को देख रमा की सीनियर पूजा दीदी ने पूरी कक्षा के सामने रमा से पूछा, रमा तुम्हारे नम्बर निशा से कम कैसे आये ? उसने तो हूबहू तुम्हारी कॉपी की थी। रमा ने कहा रहने दीजिए न दीदी मैं एक्सटर्नल परिक्षा में दिखाऊंगी।

फिर रमा दुखी होकर सोचने लगी शिक्षकों का ऐसा व्यवहार उसके लिये कुछ नया नहीं है। स्कूल में सबसे अच्छा डांस करने के बावजूद उसका रंग काला होने के कारण उसे कभी भी मंच पर नाचने नहीं दिया गया। पढ़ाई में सबसे अच्छी होने की बावजूद उसे शिक्षकों का प्यार कभी नहीं मिला। कॉलेज में सबसे अच्छा क्ल ासिकल डांस करने के बाद भी उसे तीसरा स्थान प्राप्त हुआ था।

इसीलिए ऐसे व्यवहार से रमा की पुरानी दोस्ती थी। उसे पता था वह दूसरों से कम सुन्दर है और इसीके साथ उसे चलना है और हर कदम पर जीत कर दिखाना है। और आज तक वह करती आयी है, यही इसका विश्वास भी है।

नौकरी

घर के लैंड लाईन नम्बर पर शारदा के लिए फोन था। जैसे ही शारदा ने बात कर फोन का रिसीवर रखा, उसे अपने अंदर एक अलग सा आत्मविश्वास महसूस हुआ। अपने कमरे में जाकर उसने कुछ प्रमाणपत्र निकाले और सास अलकादेवी से बोली, 'माँ जी, मैं बाहर जा रही हूँ। कुछ प्रमाणपत्र फैक्स कराकर आ जाऊँगी। और हाँ, इसी हफ्ते शुक्रवार को मैं आप लोगों को घर छोड़ दूँगी।आप चाहें तो अपने बेटे से कहकर सब पेपर तैयार करवा ल ीजिये, मैं साईन कर दूंगी त

अलकादेवी चिड़कर बोलीं, 'जहाँ जाना है जाओ, तुम्हारी मर्जी। मेरा बेटा तुमको एक पैसा भी नहीं देगा।'तू कुछ भी नहीं मांगेगी, मनहूस औरत।'

शारदा मुस्कुराई और बिना कुछ कहे घर से निकल गई द सामने दुकान में जाकर उसने अपने प्रमाणपत्र स्कैन कर तिनसुकिया कॉलेज में भेज दिए।

असल में शारदा को तिनसुकिया गवर्नमेंट कॉलेज में ल `क्चरर की नौकरी मिल गई थी।इसी सिलसिले में उसने अपने प्रमाणपत्र और एक मेल भेजकर अपनी नौकरी कन्फर्म कर ली थी।

तीन साल हुए शारदा की शादी को।पर घर में अशांति अगले दिन से ही शुरू हो गई थी त

सास अलकादेवी को शारदा एकदम नहीं भायी थी।बेटा अरविंद जिसके लिए माँ की कही बातों के सिवा और कुछ सोचने- समझने की शक्ति नहीं थी।सच तो ये है कि माँ को छोड़ वह कुछ सोचना ही नहीं चाहता थात सही बात को सही कहना तो ठीक है, पर अरविंद तो माँ की गलतियों को भी सही मानकर ही चलता था त

शारदा ने सोचा ऐसी शादी बचाकर रखने का कोई मतलब नहीं, जहाँ रिश्तों में समझौता नाम की कोई चीज़ है ही नहींत कब तक वह अकेली रिश्तों को निभाएगी इसीलिए आज उसने अपनी सासू माँ को अपना फैसला सुना दिया था।मायके में जाकर अपने भाई पर बोझ नहीं बनाना चाहती थी इसलिए आज जब उसे नौकरी का सहारा मिल गया तो अब उसे किसी दूसरे सहारे की जरूरत नहीं रही।

विश्वास की परीक्षा

मनोरमा नियमित अध्ययन की आदत डालने के लिए कक्षा दसवीं की परीक्षा रखी।

बच्चों के वचन पर विश्वास कर

उत्साह से प्रश्नपत्र लेकर वह कक्षा में पहुँचीं।

'सब तैयार हैं?'

'यस मैम!' कई स्वर एक साथ गूँज उठे।

उत्तर-पुस्तिकाएँ भरने लगीं। कलमों की सरसराहट पूरे कमरे में फैल गई।

तभी उनकी नज़र अंतिम बेंच पर बैठे एक छात्र पर पड़ी। प्रश्नपत्र सामने है उत्तर-पुस्तिका खुली है... पर उसकी कलम स्थिर।

मनोरमा उसके पास पहुँचीं।

'क्या हुआ? कुछ समझ नहीं आ रहा?'

लड़के ने बिना किसी झिझक के कहा, 'मैम... मैंने पढ़ा ही नहीं।'

क्यों? तुम लोगों ने तो वचन दिया कि तुम सब लोग पढ़कर आओगे

'जी..

फिर पढ़े क्यों नहीं?'

लड़का सहजता से बोला, 'मन नहीं किया।'

मनोरमा ने उसकी उत्तर-पुस्तिका बंद करते हुए शांत स्वर में कहा, 'इस प्रश्नपत्र में तो पाठ्यक्रम के प्रश्न थे, लेकिन जीवन की पहली परीक्षा में तुम अपने ही वचन के सामने अनुत्तीर्ण हो चुके हो।'